Mantra Pushpanjali with Meaning in Hindi

हवन, पूजन, आरती, ग्रहप्रवेश, विवाह कर्म या अन्य पूजन से संबंधित कार्यों में देव शक्तियों को मंत्र पुष्पांजलि अर्पित की जाती है, मंत्र पुष्पांजलि के बाद ही धार्मिक पूजा के अनुष्ठान पूर्ण होने की मान्यता है।

ॐ द्य यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् द्य ते ह नाकं महिमान: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा:

हिन्दी भावार्थ: देवों ने यज्ञ के द्वारा यज्ञरुप प्रजापती का पूजन किया। यज्ञ और तत्सम उपासना के वे प्रारंभिक धर्मविधि थे। जहां पहले देवता निवास करते थे (स्वर्गलोक में) वह स्थान यज्ञाचरण द्वारा प्राप्त करके साधक महानता (गौरव) प्राप्त करते हैं।

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने
नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे
स मे कामान्कामकामाय मह्यम्
कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु द्य कुबेराय वैश्रवणाय
महाराजाय नम:

हिन्दी भावार्थ: हमारे लिए सब कुछ अनुकुल करने वाले राजाधिराज वैश्रवण कुबेर को हम वंदन करते हैं। वो कामनेश्वर कुबेर मुझ कामनार्थी की सारी कामनाओं को पूरा करें।

ॐ स्वस्तिद्य साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं
वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं माहाराज्यमाधिपत्यमयं
समंतपर्यायी स्यात्सार्वभौम: सार्वायुष आंतादापरार्धात
पृथिव्यै समुद्रपर्यंताया एक राळिति द्यद्य

हिन्दी भावार्थ: हमारा राज्य सर्व कल्याणकारी राज्य हो। हमारा राज्य सर्व उपभोग्य वस्तुओं से परिपूर्ण हो। यहां लोकराज्य हो। हमारा राज्य आसक्तिरहित, लोभरहित हो। ऐसे परमश्रेष्ठ महाराज्य पर हमारी अधिसत्ता हो। हमारा राज्य क्षितिज की सीमा तक सुरक्षित रहें। समुद्र तक फैली पृथ्वी पर हमारा दीर्घायु अखंड राज्य हो। हमारा राज्य सृष्टि के अंत तक सुरक्षित रहें।

ॐ तदप्येष: श्लोकोऽभिगीतो
मरुत: परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे
आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वे देवा: सभासद इति

॥मंत्र पुष्पांजली॥

हिन्दी भावार्थ: राज्य के लिए और राज्य की कीर्ति गाने के लिए यह श्लोक गाया गया है। अविक्षित के पुत्र मरुती, जो राज्यसभा के सर्व सभासद है ऐसे मरुतगणों द्वारा परिवेष्टित किया गया यह राज्य हमें प्राप्त हो यहीं कामना।